



॥ कन्या पूजन और अष्टमी/नवमी का
महत्व ॥
जय माता दी!

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ कन्या पूजन और अष्टमी/नवमी का महत्व ॥

नवरात्रि में अष्टमी और नवमी का विशेष धार्मिक महत्व माना जाता है। इन दिनों मां दुर्गा के स्वरूपों की विशेष पूजा के साथ कन्या पूजन करने की परंपरा है। कन्याओं को देवी के स्वरूप के रूप में सम्मान देकर उनकी पूजा और भोजन कराया जाता है।

अष्टमी का महत्व

नवरात्रि की अष्टमी तिथि को महाअष्टमी कहा जाता है। इस दिन मां दुर्गा की विशेष आराधना की जाती है। कई परंपराओं में अष्टमी के दिन कन्या पूजन और हवन किया जाता है।

अष्टमी को विशेष रूप से मां महागौरी की पूजा की जाती है। भक्त देवी से सुख, शांति, समृद्धि और परिवार के कल्याण की प्रार्थना करते हैं।

नवमी का महत्व

नवरात्रि की नवमी को महानवमी कहा जाता है। यह नवरात्रि की साधना का अंतिम दिन माना जाता है। इस दिन मां सिद्धिदात्री की पूजा की जाती है।

नवमी के दिन भी कई परिवारों में कन्या पूजन किया जाता है और इसके बाद नवरात्रि व्रत का पारण किया जाता है।

कन्या पूजन का महत्व

कन्या पूजन में छोटी कन्याओं को मां दुर्गा के विभिन्न स्वरूपों का प्रतीक मानकर उनका सम्मान किया जाता है। उनके चरण धोकर पूजा की जाती है, उन्हें भोजन कराया जाता है और श्रद्धा के अनुसार दक्षिणा या उपहार दिया जाता है।

कन्या पूजन का मूल भाव नारी शक्ति, मातृशक्ति और बालिकाओं के सम्मान से जुड़ा है।

कन्या पूजन की सरल विधि

घर और पूजा स्थान की स्वच्छता करें।
कन्याओं को आदरपूर्वक घर पर आमंत्रित करें।
उनके चरण स्वच्छ जल से धोएं।
माथे पर रोली या कुमकुम का तिलक लगाएं।
अक्षत और पुष्प अर्पित करें।
श्रद्धा से सात्विक भोजन एवं प्रसाद खिलाएं।
कन्याओं को फल, वस्त्र, दक्षिणा या अपनी क्षमता के अनुसार उपहार दें।
अंत में उनके आशीर्वाद लेकर मां दुर्गा से प्रार्थना करें।
परंपरा के अनुसार एक छोटे बालक को भी भैरव स्वरूप मानकर कन्या
पूजन में शामिल किया जाता है।

कन्या पूजन का आध्यात्मिक संदेश

कन्या पूजन केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि नारी शक्ति के सम्मान और समाज में बालिकाओं के महत्व को स्वीकार करने का संदेश भी देता है। नवरात्रि हमें सिखाती है कि देवी की पूजा के साथ-साथ जीवन में महिलाओं और कन्याओं का सम्मान भी किया जाना चाहिए।
“जहां नारी का सम्मान होता है, वहां शक्ति, करुणा और समृद्धि का वास होता है।”